Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

आधुनिक प्रबंध काव्यों में शैली वधान

डॉ॰ ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में परम्परागत शिल्प के स्थान पर काव्यरूपों के मिश्र शिल्प का प्राधान्य है । यही कारण है कि "नाटकीय विधान आज के प्रबन्ध काव्य के शिल्प का महत्वपूर्ण अंग है । वर्णनात्मक शैली के स्थान पर प्रभूत मात्रा में नाट्य प्रबन्धों की रचना इस तथ्य का परिचायक है । समकालीन मनुष्य की विडम्बनापूर्ण मन:स्थितियों, उसके टूटने बिखरने के वास्तविक चित्रों के अंकन के लिए नाटकीय पद्धति का आश्रय लेना स्वाभाविक है । आज का रचनाकार आज के मनः सत्यों की अभिव्यक्ति वर्णन प्रधान और विवरण-प्रधान पद्धतियों से न कर प्रायः संवाद शैली में पात्रों के मानसिक आघात-प्रत्याघातों को ध्यान में रखकर करता है । संवादों के माध्यम से जीवन की आंतरिक स्थिति का बिम्ब प्रस्तुत होता है और उसके द्वारा काव्य वस्तु का विकास होता है ।" इसके साथ ही "काव्यत्व के माध्यम से विश्लेषित और व्याख्यायित जीवन संदर्भो में "संडन चेंज" (आकस्मिक परिवर्तन) अनवाण्टेड और असम्भावित द्वन्द्व, कौतूहल पूर्ण स्थिति, परिवर्तन और टैन्शन आदि के लिए नाटकीयता अपेक्षित होती है । अपने समय की विडम्बनापूर्ण स्थितियों का अंकन करने में नाटकीय रचनाएँ सर्वाधिक उपयुक्त है । डॉ. नामवर सिंह के अनुसार - 'आज की विडम्बनापूर्ण स्थिति के सम्मुख नाटकीय काव्य के लिए अपार सम्भावनाएँ है और नाटकीय रचनाएं ही इस स्थिति की चुनौती को अच्छी तरह स्वीकार भी कर सकती है ।"

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में कथ्य अभिव्यक्ति हेतु अनेक शैलियों का प्रयोग किया गया है । जिनमें नाटकीय शैली, प्रश्न शैली, तर्क शैली, आत्मालाप शैली एवं मनोवैज्ञानिक शैली प्रमुख है । कहीं-कहीं न्यून मात्रा में वर्णनात्मक शैली का भी प्रयोग मिलता है, किन्तु प्रधानतः नाटकीय शैली व्यवहत हुई है । अंधायुग, एक कंठ विषपायी, प्रवाद पर्व, शम्बूक, खण्ड-खण्ड अग्नि में रंगमंचीय गुणात्मकता का पूर्ण समावेश है । कनुप्रिया, आत्मदान आदि कृतियों में एकालाप या आत्मालाप पद्धति है । समग्रत: नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्य नाट्योन्मुखी होने के कारण सशक्त एवं सम्प्रेषणीय बन पड़े हैं ।

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग

(i) नाटकीय शैली

'अंधायुग' में रंगमंचीय गुणात्मकता का पूर्ण समावेश है । भारती ने नाटकीय गतिशीलता का विशेष ध्यान रखा है । नाटक के प्रारम्भ में मंगलाचरण और उद्घोषणा की योजना इसी नाटकीय स्वरूप को आधार मानकर की गई है । मध्य में अन्तराल देकर वृद्धयाचक के माध्यम से नाटकीय प्रतीकात्मकता स्पष्ट करने का प्रयास किया है । समापन में प्रभु की मृत्यु की सूचना के साथ-साथ गायन

Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

निष्कर्ष प्रस्तुत करता है । कथा गायन की ये परम्परा लोकनाट्य परम्परा से ली गई है । कथा गायन द्वारा ही कवि आगामी कथा की सूचना देता है तथा दृश्य परिवर्तन करता है । कथागायन दारा ही कवि ने वातावरण की मार्मिकता को गहन और गम्भीर बनाते हए प्रतीकार्थ को स्पष्ट किया है । वस्तुत: अन्धायुग नाटकीयता के साथ-साथ कवित्व का भी परिचायक है । भारती स्वीकार करते हैं कि नाटक अन्तोगत्वा कविता की सबसे निकटतम विधा है । डॉ. रामदरश मिश्र कहते हैं कि "इस कृति में जहां एक और गीतिकाव्य की तीव्र संवेदना हैं वहां नाटक का प्रखर अन्तर्द्वन्द्व भी उपस्थित हुआ है - गीतिनाट्य की संज्ञा से अभिहित करते हैं । अन्धायग एक व्यापक संवेदना की नाटकीय अभिव्यक्ति है और यह अभिव्यक्ति नाटकीय प्रस्तुति में न होकर चरित्रों के नाटकीय आत्ममंथन में है । यथा-

धृतराष्ट् - कौन है विदुर ?
विदुर - एक प्यासा सैनिक है महाराज
धृतराष्ट्र - क्या कह रहा है यह ?
विदुर - कहता है 'जयहो धृतराष्ट्र की ?
जिहवा कटी है महाराज । गंगा है

पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व के कारण ही स्वगत संवादों की अधिकता हो जाती है । किन्तु वह कथा के नैरन्तर्य को बनाए रखते है क्योंकि प्रत्येक पात्र कि समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुरूप छोटी-बड़ी लय है जो समय-समय पर उतार-चढ़ाव के साथ प्रस्तुत होती है । अन्धायुग अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण अनेक बार सफलता पूर्वक अभिनीत हो चुका है । 'एक कंठ विषपायी' का शिल्प काव्यात्मक होते हुए भी नाटकीय तत्वों से सम्पूरित हैं । यह सामान्य नाट्य विधान से भिन्न प्रबन्ध और नाटक दोनों की तकनीक से युक्त है । पूरा काव्य चार दृश्यों में विभक्त है । दृश्यारम्य पात्रों के माध्यम से सूक्ति वाक्योच्चार के द्वारा कराया जाता है । कवि ने दृश्य की सम्पूर्ण योजना को प्रारम्भ में पद्य में बीच-बीच में गद्य में प्रस्तुत करके वातावरण की सृष्टि की है । 'एक कंठ विषपायी' की विशेषता है कि कवि स्वयं तटस्थ रहकर पात्रों को स्वतंत्र छोड देता है । यही पात्र अपने क्रिया व्यापार द्वारा समग्र कथा को बहा ले जाते है।

वस्तुत: एक कंठ विषपायी न केवल संवादों की दृष्टि से अपितु इसीलिए भी काव्य नाटक है कि इसमें अनेक मुद्राएं कविता में व्यजित न होकर संकेतित हुई है । दक्ष की, संवाद के बाद क्रूर हँसी, हँसते हुए संवाद कहना तथा मृत्यु का प्रवेश में स्थितियाँ कविता के माध्यम से न होकर कोष्ठकों के माध्यम से संकेतित हुई है । इस प्रकार एक कंठ विषपायी में स्थितियों का घात- प्रतिघात और शब्दों में प्रश्नोत्तरता उसे शिल्प के स्तर पर कविता से अतिक्रमित करती हुई नाटक के क्षेत्र में उपस्थित करती है।

'संशय की एक रात' रंग मंचीय संभावनाओं से परिपूर्ण कृति है । आंतरिक रंग संवेदना कथ्य के साथ सहज सम्बंध बनाती हुई चली है । किन्तु अनेक स्थलों पर राम और लक्ष्मण तथा राम और

Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

विभीषण के संवाद काव्य नाटकीयता पर हावी हो गए है । वस्तुतः इसका कारण कवि की दार्शनिक शब्दावली है जहां राम लम्बे-लम्बे एकालाप बोलते हैं क्योंकि संवाद की मूल चेतना प्रभावपरक होने की अपेक्षा व्याख्यापरक हो जाती है । नाटकीय शिल्प की दृष्टि से 'संशय की एक रात' का दूसरा सर्ग विशेष उल्लेखनीय है जहाँ नाटकीय तत्व पूरी तरह उभरकर आये है । यहाँ केवल राम का एकालाप नहीं है अन्य पात्रों से भी वार्तालाप हुआ है । यथा -

राम - छाया? कैसी? किसकी छाया?

नील - यह तो पता नहीं देव ! लेकिन वह छाया / निश्चय ही माया है।

राम - रावण की ?

नील - संभवतः

राम - तो फिर तुम सबके मन्त्रपूत बाण क्या हुए ?

ऐसे प्रसंगों में जहाँ आंतरिक रंग संवेदना की रक्षा हुई है वही दृश्य योजना में कलात्मक सफलता भी मिली है।

'महाप्रस्थान' एक चिन्तन प्रधान काव्य है । इस काव्य कृति में नाट्य वैशिष्ट्य संवादों की विपुलता है । इसके अतिरिक्त कवि की ओर से रंगमंचीय निर्देश और संकेत भी नहीं है, फिर भी सवाद या कथोपकथन की दृष्टि से देखा जाये तो प्रस्तुत काव्य का दूसरा सर्ग 'स्वाहा पर्व' महत्वपूर्ण है । इसी सर्ग में सघन और नाटकीयता से परिपूर्ण संवाद मिलते हैं । यथा -

भीम - बन्धु ! क्या अर्थ है इसका ?

युधिष्ठिर - किसका?

भीम - हिम यातना के इस आत्म वरण का /

युधिष्ठिर - भीम ! क्या कुछ अर्थ था । उस मणि मुकुट धारण का?

कौरवों से युद्ध का ?

जहां चिन्तन है वहां युधिष्ठिर के संवाद लम्बे हुए हैं पर नीरस नहीं है । युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन के बीच जो वार्तालाप चलता है, वह पूर्णतः बौद्धिक, वैचारिक

और चिन्तन के स्तर का है । कहीं-कहीं संवाद की संक्षिप्तता भी दृष्टिगोचर होती है । कथोपकथन गतिशील है । आधुनिक तकनीक के प्रयोग से प्रस्तुत नाट्यकाव्य रंगमंच पर खेला जा सकता है ।

"प्रवाद पर्व' की रचना नाटय रूप में की गई है । अनुक्रम के अन्तर्गत कथा को पांच शीर्षकों में विभक्त किया गया है । उसमें आवश्यकतानुसार आरम्भ, मध्य एवं ___ अन्त में रंगमंचीय विधान की तरह गद्य में निर्देश एवं संकेत भी रखे गए हैं । प्रवाद पर्व में अंक दृश्य योजना नहीं है किन्तु शेष सभी विशेषताएँ नाटक से सम्बंधित है । संवाद चुस्त, छोटे और कथावेग को बनाए रखने में सक्षम है । उदाहरण देखिए -

Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

राम - क्या हुआ? सभा ने क्या निर्णय किया?

भरत - उचित कार्यवाही आवश्यक है ।

मन्त्री - प्रभु से यही निवेदन करना था ।

राम - उचित कार्यवाही? कैसी

मन्त्री - पता चला, वह साधारण धोबी है

लक्ष्मण - हाट में दोषारोपण करते उसे लोगों ने सुना है

वस्तुत: प्रवाद पर्व के संवादों में वह क्षमता है कि वे अभिनय में ढाल नाटकीय क्रिया व्यापार कर सकें । इस प्रकार हम कह सकते है कि प्रवाद पर्व काव्य नहीं 'काव्यनाटक' है ।

'शम्बूक' में दृश्यात्मकता की दृष्टि से देखा जाये तो यह कहना होगा कि किंचित फेर-बदल से यह काव्य काव्यनाटक के रूप में परिवर्तित हो सकता है इसका अपना एक आंतरिक रंगमंच है। दन्द्र की स्थिति है । कम पात्र होते हुए भी रंग सम्भावनाओं से युक्त यह काव्य एक समसामयिक सन्दर्भों का कुशल नाटक होने की क्षमता रखता है ।

'खण्ड-खण्ड अग्नि' छ: अंकों में विभक्त काव्य नाटक है । कवि ने रंगमंचीय गुणात्मकता का पूर्ण समावेश किया है । यद्यपि कृति में पात्रों की संख्या अधिक है तथापि दृश्य परिवर्तन में कथ्य सूचना के लिए थोड़े-थोड़े पात्र मंच पर आते हैं । पात्रों के संवाद चुस्त, चुटीले एवं मार्मिक है । कवि ने जान बूझकर इस कृति को लचीला रखा है कि जहां इसे मंच पर नाटक के रूप में प्रस्तुत करने की सुविधा रहें । वहाँ नृत्य नाटिका के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सके । दूरदर्शन और रेडियों माध्यमों को भी ध्यान में रखा गया है । आधुनिक तकनीक द्वारा प्रस्तुत कृति को सफलता पूर्वक मंचित किया जा सकता है ।

(ii) प्रश्नात्मक शैली

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में प्रश्न शैली का बहुधा प्रयोग हुआ है । पात्रों द्वारा विविध समस्याओं को प्रश्नों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । फलत: एक और प्रश्न शैली कथ्य विकास में सहायक हुई है वहीं समस्याएं अपने सही रूप में सामने आकर पाठक को उद्वेलित करती है । प्राचीन आदर्श, धारणाएँ और मान्यताएँ अधुनातन जीवन की समस्याओं के समाधान निमित अपर्याप्त या हीन सिद्ध हुई है । कनुप्रिया में कवि ने राधा के माध्यम से इसी प्रश्नांकित समस्या को उठाया है - "अर्जुन की तरह कभी / मुझे भी समझा दो / सार्थकता क्या है बन्धु ? / मान लो मेरी तन्मयता के गहरे क्षण / रंगे हुए अर्थहीन आकर्षक शब्द थे / तो सार्थक फिर क्या है कनु?"

'शम्बूक' में शासकीय दायित्व के सामने लगा प्रश्न चिन्ह भी ऐसा ही है - "राम तुम राजा बने किस हेतु हो? / व्यष्टि और समष्टि मन के सेतु हो? /

शद्रघाती बने करके क्रोध / क्या तुम्हारा यही समता बोध ? "

Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

(iii) **विचारात्मक अथवा तर्क-प्रधान शैली**

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में तर्क शैली का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है । युद्ध का आंतक मानव जीवन की सर्वप्रमुख समस्या बना हुआ है । 'संशय की एक रात' में साधारण जन के प्रतीक हनुमान राम को अपने तर्कों द्वारा परास्त करके युद्ध की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए सीता को अपहत स्वतंत्रता की प्रतीक बताते हैं ।

प्रवाद पर्व में राम की वैयक्तिकता और उसकी सामाजिकता का प्रस्तुतिकरण तर्क शैली में हुआ है । यथा - "सीता - आज आप उद्विग्न क्यों है आर्य पुत्र ?

राम - उद्विग्न ?

नहीं सीता ! उद्विग्न नहीं हूँ ।

सीता - तब चिन्तित होंगे ।

राम - चिन्तित?

हाँ चिन्तित हो सकता हूँ ।'

(iv) **मनोवैज्ञानिक शैली**

मानसिक अंतर्द्वन्द्व एवं मनोदशा को दर्शाने के लिए समीक्ष्य प्रबन्ध काव्यों में मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग किया गया है । यथा –

"कितनी बार / कितनी सांझ । इस सिन्धु बेला तट / बितायी /
काट दी पर व्यर्थ / कितनी बार कुचला बालुओं को /
स्वयं के पदचिन्ह व्यूहों से / घिरे बैठे रहें / सीता मुख बनाते /
सदा कॉपी उंगलियां / पर हाय / यह बालू वाली जानकी /
प्रति सांइ. / ज्वार जल में समर्पित होती रही ।

सिन्धु तट पर टहलते हुए राम के मन में जो बेचैनी है उसी का यथार्थ अंकन 'संशय की एक रात' में किया गया है । वैयक्तिक प्रश्न सार्वजनिक न हो यही उनकी इच्छा है । ऐकान्तिक आत्ममंथन और सामूहिक दायित्व बोध की संवेदना ने मानसिक धरातल पर लगभग सभी को बेचैन बना दिया है । प्रवाद पर्व के राम भी इसी अंतर्द्वन्द्व की पीड़ा में उलझे हुए है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है क नवीन चेतना के प्रबंध काव्यों में मन:सत्यों की अ भव्यक्ति के लए नाना शै लयों का प्रयोग हुआ है |

संदर्भ सूची ----------

1. **डॉ. प्रेमचन्द मितल : नवीन भावबोध के प्रबन्ध काव्यों में सांस्कृतिक चेतना**, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली 1990 **पृष्ठ** -24
2. **डॉ. हरिचरण शर्मा : नयी कविता नये धरातल**, पदम प्रकाशन, जयपुर **पृष्ठ** - 212

3. नामवर संह, क वता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 173
4. **डी. राम दरश मिश्र : हिन्दी कविता आधुनिक आयाम**, वाणी प्रकाशन, दिल्ली **पृष्ठ** - 142
5. **धर्मवीर भारती : अन्धायुग**, कताब महल, इलाहाबाद 1993
6. **नरेश मेहता : संशय की एक रात**, पुस्तकायन, इलाहाबाद 1970
7. **नरेश मेहता : महाप्रस्थान**, इलाहाबाद 1981 **पृष्ठ** – 85
8. **नरेश मेहता : प्रवाद पर्व**, लोकभारती, इलाहाबाद 1977 **पृष्ठ** - 39
9. **धर्मवीर भारती : कनुप्रिया**, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 1976 **पृष्ठ** - 69

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

डॉ. ओमप्रकाश